उस क़ौम को शमशीर की हाजत नहीं रहती, हो जिसके जवानों की खुदी सूरते फौलाद।

ऑल वर्ल्ड बोहरा जर्नल

रजि: **RAJH/9396** | जुलाई: 2008 | वर्ष –16 | अंक 1 | मूल्य 3 रु. | वार्षिक 35/– रु.

इदारिया

अख़लाक की हिम्मत बिन कुछ काम नही बनता।

आल वर्ल्ड बोहरा जर्नल की इशाअत पिछले कुछ महीनों से किन्हीं वुजूहात की बिना पर बदस्तुर नहीं रह सकी। नायब साहब के बाद इस काम के लिये मुनासिब कलमकार के इतिंख़ाब में वक्त लगा। फिर नये सिरे से इसके सलाहकार बोर्ड की तश्कील भी की गई। इस देरी का इदारे को अहसास है।

यह ताज़ा अंक इस विश्वास के साथ पेश करते हुए इत्मीनान महसूस करते है कि इसे समाज के हर वर्ग का सहयोग मिलेगा और इंशा अल्लाह! अब इसकी इशाअत सदा बदस्तूर रहेगी।

इस अंक के साथ कुछ नये कॉलम भी मुस्तकिल तौर पर दिये जायेंगे। यह तबदीली आप महसूस करेंगे और इसे बहतर बनाने में आपके मशविरे हमारे लिये मददगार साबित होंगे। इदारे की कोशिश रहेगी कि इस अख़बार के जरिये हमारी तहरीक से जुड़े हुए बुजुर्गों के रूझानात, तहरीक की रविश, उतार–चढ़ाव, गुज़रने वाले वाकिआत की जानकारी आपको बराबर मिलती रहे। इस सिलसिले में आप सभी हज़रात का क़लमी, इल्मी और माली सहयोग भी दरकार रहेगा। व्यपारी, उद्योगपति और हेसीयत वालों से इसके लिये इशतिहार देने और आम लोगों से इसके खरीदार बनने की गुज़ारिश है।

जैसा कि पिछले कई सालों से होता चला आया है कि कुछ असामाजिक तत्व मुक़द्दस दिनों में धार्मिक स्थलों पर कुछ एसी नपसंदीदा हरकतें कर बैठते हैं, जिनके सबब पूरी क़ौम में उलझन पैदा हो जाती हैं, मोहल्लों में कर्फ़्यू लगने और मस्ज़िद में नमाज़ियों की जगह के बंटवारें जैसे हालात पैदा हो जाते है। अब फिर मुक़द्दस दिन करीब होते जा रहे हैं इसलिये मुक़द्दस मुकामात, अदालत के फैसलों और शरीयत के उसूल के मुताबिक लोगों के जज़्बात का अहतराम करने की समाज के हर इन्साफ पसंद फर्द से हमारी अपील है।

ताकि एसे नगावार वाक़िआत फिर न हो और हर शख़्स अपनी अकीदत और श्रृद्धा के मुताबिक धार्मिक स्थलों पर आ–जा सकें, जहां किसी तरह का भेद–भाव नहीं होता है। और फिर एसा भी नहीं होता है कि लोग इन खतरों से बेख़बर हैं, लेकिन सब कुछ जानते हुए भी अपनी ज़बान बंद रखते है, उन्हें स्वंय में अख़लाक़ी हिम्मत पैदा करने की सख़्त ज़रूरत हैं। यह जानने की भी ज़रूरत है कि जान और माल का मालिक सिर्फ अल्लाह है। वही इस कायनात का कारोबार चलाता है और किसी का उसमें दख़ल नहीं है।

आख़िर में हम शेख अहमद अली राज़ और याहया अली वकील साहब के अलावा इस दौरान जो भाई बहन दारे फानी से कूच कर गये हैं, उनकी ख़िदमत में ख़िराज़े अक़ीदत पेश करते है अल्लाह उन्हें जन्नत नसीब करें। – आमीन! आबिद अदीब

शेख उल फाज़िल अलहाज़ अहमद अली साहब का दारूल बका की तरफ कूच!

कलामें पाक कर इस्माइली तफसीर और 103 किताबों की विरासत छोड़ कर अल्लामा शेख अहमद अली साहब 20,जून 2008 को सुबह 9.00 आलमें फानी को ख़ैरबाद कह गये।

आप पहली रजब 1334 को राज नगर कस्बे में पेदा हुए आपके वालिद मुल्ला कुरबान हुसैन जी भी मुत्तक़ी और परहेज़गार थे।

आपकी फैमेली के शजरे के मुताबिक आप मुल्ला कुरबान हुसैन बिन मुल्ला एहमद अ़ली बिन मुल्ला हिब्तुल्लाह जी बिन इब्राहीम जी बिन लुक़मान जी जो राजनगर वाला के परिवार से थे।

शेष पृष्ठ : 3 पर

दी बोहरा वेलफेयर सोसायटी ने 134 तुलुबा को तालीमी इनामात दिये

दि बोहरा वेलफेयर सोसायटी हर साल सैयदा फातिमा जेहरा अ.स के शहादत के मौके पर तालीम के मैदान में अव्वल आने वाले बच्चों को इनामात तकसीम करती है। बोहरा बच्चीयां तालीम के मेदान में लगातार आगे आती जा रही है जो इस बात से साबित है कि इस साल कुल 134 तुलुबा को नवाजा गया। जिसमें से कुल 89 बच्चीयां और 45 बच्चें है। 1 से 8 वीं तक जिन बच्चों के 90% से ज्यादा मार्कस् थे कुल 69 तुलुबा को नवाजा गया। तथा 9 से 12 तक कुल तुलुबा 14 जिन्होने 65% से ज्यादा नम्बर हासिल किये नवाजा गया। कॉलेज स्तर पर *BE-10, B.Sc.-1, B.Com– 6, B.B.M.– 1, B.D.M.-1, M.Sc. –3, M.Com.– 7, M.A.-1, M.B.A.-4, C.A. –3, Ph.d. –2* है।

सोसायटी के सेक्रेट्री हाजी कमरूद्दीन मण्डी वाला ने बताया कि यह सख्यां हर साल क्वालिटी और सख्यां दोनों ही में बढ़ती जा रही है जो हमारी कौम के लिये बाइसे फख्र है।

हाजी मुल्ला इस्माईल जी अत्तर वाला ट्रस्ट हर साल इसी मोके पर हाजी मुल्ला इस्माईल जी अत्तर वाला एवार्ड उन चुनिंदा लोगों को देती है जो अपने अपने शोबों में बहुत आला मकाम रखते हो। मुख्य ट्रस्टी हाजी हिबतुल्लाह अतारी ने बताया कि इस साल यह इनामात तालीम मे फरहत अब्बास, कल्वर और संगीत मे मुरतज़ा मगर (नबीना) व खेल में अनीस आर. जी. को दिया गया।

इनाम हासिल करने वाले तुलुबा के नाम पेज 4 कालम 1 से दर्ज है।.

हमारा सवाल : जमाअत की जवाबदेही व पारदर्शिता पर आपके तास्सुरात ?

Accountability and transparency of Jamaat. What are your views on this?

Please send your contribution to: The Editor : All World Bohra Journal , 73 Dr. Zakir Hussain Marg, Udaipur

बोहरा तहरीक की बुज़ुर्ग ख़्वातीन

सैयदा फातिमा जेहरा अ.स. की अहमीयत इसलिये तो है ही कि आप पैग़म्बरे इस्लाम की बेटी है और अमीरूल मूमिनीन अली अ.स. की जोजा हैं लेकिन पूरे आलमे इस्लाम में आपको मां का दर्जा हासिल है। मां की अहमीयत इस्लाम में कितनी है यह इस हदीस से साबित है कि '' मां के पांव के नीचे जन्नत होती है''।

हमारे वतन की आज़ादी में भी ख़वातीन ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया, जिसमें बड़े नामों में रानी लक्ष्मी बाई, सरोजिनी नायडू, इंदिरा गांधी वगेराह है। हमारी तहरीक भी कमोबेश ख्वातीनों के दम खम पर अपने 35 साल का सफर तय कर चुकी है।

हमारा यह कॉलम बोहरा तहरीक में ख्वातीनों की भागीदारी पर रोशनी डालेगा।

सुगरा बाई उर्फ खत्तू बाई गोरिया

उदयपुर के हर बोहरा हजरात मोहतरिमा सुगरा बाई उर्फ खत्तू बाई गोरिया से पूरी तरह वाकिफ है। आप खांजीपीर में मुकीम है और 90 साल का सफर तय कर चुकी है। मगर आज भी आपके होंसलें में किसी तरह की कमी नही आई और उसी जोश खरोश से तहरीक के हर प्रोग्रामों में शिरकत करती है।

बोहरा यूथ तहरीक के शुरू के दिनों में सब कुछ आपकी समझ के बाहर था मगर पहली

बार जब आपके घर मर्सिया पढ़ने ओर सुनने वाली बहनों ने आना बंद किया तब बहुत बडा सदमा लगा तब आपके शोहर ने होंसला दिया कि ग़मे–हुसैन के लिये किसी हुजूम का होना जरूरी तो नही?इस सवाल ने आपको बहुत बड़ी ताकत दी और आपने अपनी बहू बेटीयों को लेकर मर्सियों को जारी रखा। उसके बाद मुसलसल होने वाली घटनाओं ने आपको बहुत कुछ सिखाया ओर आप खुद न सिर्फ साबित कदम रही बल्कि अपने पूरं कुम्बे को दरस देती रही कि हमने जो रास्ता इख़्तियार किया है वह कभी गलत नहीं हो सकता। लिहाजा हर उस मोर्चे में शिरकत करो जो हमारी इस तहरीक को मजबूत बनाता है ओर आप पूरी दिलचस्पी से हिस्सा लेकर तहरीक को मजबूत करती रही है।

मोहतरिमा आतिका बाई लोहा वाला

मोहतरिमा आतिका बाई लोहा वाला बहुत जिंदादिल खातुन है। आप जिंदगी का बहुत बड़ा सफर तय कर 90 साल की उम्र पार कर चुकी हैं।. आपकी फेमेली का हर फर्द बोहरा तहरीक का सिपाही है और हर मोर्चे पर हाजिर रहता है। जो इस बात की तरफ इशारा करता है कि आप अपने एहलो–अयाल को होंसला देती रही हैं कि वह तहरीक के हर मोर्चे पर पूरी जांफिशानी से काम करें।

6, मोहर्रम के वाकिए में जब आपके शोहर के सिर पर गहरी चोट लगी थी ओर आपकी

हालत बहुत नाजुक बतायी जा रही थी तब भी होंसला नहीं तौड़ा। बल्कि यह कहां कि जो रास्त हमने चुना है उस पर यह सब तो होना ही है। इस वाकिये ने आपके विश्वास को और मजबूत बना दिया।

आज भी वह कहती है कि आप सब तहरीक छोड़ कर अगर चले भी जाये तो मे इस पर कायम रहुँगी। इसे मरते दम तक जिंदा रखने की कोशिश करूंगी।

मोहतरिमा मेमुना बाई कादर रसिया जी वाला उर्फ मुल्ला राज़

आप बोहरा तहरीक की एक एसी रूस्तम खातून है जो पैदाइश से ही इस्लाही तहरीक से ताल्लुक रखती हैं।

आप 95 साल की तवील जिंदगी में कई नशेबो–फराज़ से गुज़र कर चुकी हैं। आपके वालिद शेख थे और हमारे अकायद पर खासी जानकारी रखते थे। उसीका नतीजा था कि आप काफी रोशन ख्याल थे, जिसकी गहरी छाप मेमूना बाई के जिन्दगी पर भी पड़ी। आपने अपने वालिद की बरात होते देखी और बरात के नाम पर जो जुल्म कोठारीयों की जानिब से ढाये गये वो सहे हैं। आप अपने

आप को इसलिये खुशनसीब समझती हैं कि आपकी शादी ऐसे घराने में हुई जो इस्लाह पंसद बिरादरी से तआल्लुक रखता है।

आपने समाज की कारकिरदगियों में सन् 1960 से बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेना शुरू किया जब उदयपुर में आमिल जनाब हातिम भाई साहब मुकीम थे। आप उस वक्त ख्वातीन की एक एसोसियेशन की सदर मुंतखिब हुई जिससे आपमें छुपी लीडरशिप की काबिलयत उभर कर सामने आयीं। आपकी रोशन ख्याली का असर आपके औलादों मे भी देखा जा सकता है। आपने न सिर्फ बोहरा तहरीक को खुद की खिदमात से नवाजा बल्कि आपको बच्चों को भी इस बात के लिये प्रेरित किया कि वह तहरीक के लिये पूरी जांफिशनी से काम करें। आपकी बहतर तरबियत का नतीजा है कि आज बोहरा कोम को जनाब मुश्ताक हुसैन कादर रसिया जी वाले, कमाण्डर मंसूर अली और नासिर जावेद जैसे जिम्मेदार कारकुन कौम की खिदमत अजांम दे रहे है।

''पाठकों से विनती है कि यदि कौम की एसी बुर्जुग शख्सीयतों से वाकिफ हैं तो हमें भी आगाह करें।''

–इदारा

पृष्ठ 1 का शेष :

अलहाज़ जनाब शेख अहमद अली राज़

आपके दादा परदादा सब व्यापारी थे और क़ौम के ख़िदमतगुज़र थे साथ–साथ दाअ़वत की ख़िदमत भी करते थे।

तय्याबियाह स्कूल से बुनियादी तालीम हासिल कर उस्ताद अली मोहम्मद जी हेडमास्टर साहब और मआविन *(assistant)* मास्टर इस्माईल जी अ़त्तारी से तालीम हासिल की। बाद में हाज़िर आमिल जनाब अब्दुल तय्यब जमालुद्दीन के ज़रिये सूरत में सैफी दरस में दाख़िल हुए।

आपकी जुबानी ''मेरे वालिद सा. बड़े परहेज़गार और पाक साफ थे, हमारी तालीम तरबीयत बहतर तरीक़े से की। आप हमें हमेशा यह कहते थे कि आले मोहम्मद अलेहिस्सलाम की ख़िदमत निज़ाम के अन्दर रह कर करना, अपना उसूल मत छोड़ना। नज़मी इक़्तेदार की तरफ इशारा करके कहते थे कि हमने भी बहुत तकलीफ उठाई है, तुम एहतियात रखना। दुनियादारी से दूर रहना। इन बातों की हक़कीत हमारे नज़दीक बाद में वाज़ेह हुई, मेरे साथ मेरे भाई शेख़ याकुब अली भी शरीक थे।''

आपने चार हज्जे बदल और पॉच हज की। आपके वालिद साहब कपड़े के बड़े व्यापारी थे और चालीस (40) साल तक रसूलपूरा की मस्जिद में तवल्ली की (नमाज़ वग़ैरा पढ़ाई) और इस मस्जिद का झगड़ा भी निपटाया। उदयपुर में हर साल ईदुल्अज़हा (बकराईद) पर कुरबानी पर रोक थी वह दरबार फतहसिंह जी से कह कर हटाई। मौलाई ख़ॉजी पीर जी के मज़ार पर चान्दी का

दरवाजा बनवाया।

सन् 1346 हि. में उदयपुर में सय्यदना ताहिर सैफुद्दीन साहब के हाथों पर आपका निकाह उनके चाचा अब्दुल हुसैन की बेटी सुगरा बाई के साथ हुआ। यह एक तरह का बाल विवाह था। उस वक्त आपकी उम्र 12 साल और सुग़रा बाई की उम्र 9 साल थी। जिस (1357 हि.) साल आप दरस में मुकय्यद हुए उसी साल ज़िल्हाज की 7, तारीख आपके घर बेटा पैदा हुआ जिसका नाम युसफ रखा गया।

आपके तीन बेटे और चार बेटिया पेदा हुई। बेटे में युसूफ, लूक़मान, अब्बास, और बेटिया शिरिन, सकीना, शहरे बानू और नफीसा है।

सन् 1360 हि. में युसूफ नजमुद्दीन दरस सैफी के अमीर बने तब आप की उम्र 20 साल थी। युसूफ नजमूद्दीन ने आते ही सैफी दरस का नाम बदल कर अलजामिया सैफिया रखा और दूसरे स्कूलों की तरह यहॉ तालीम शुरू की। एक दिन क्लास में आए और खड़े–खड़े उस्तादों को तालीम देने की परीक्षा ली फिर लिखित परीक्षा का निज़ाम बनाया। परीक्षा के परचे स्टेण्डर्ड के न होने पर उसमें बहुत सी खामीयां और गल्तीयां होने पर मुफय्यद आला शेख सज्जाद हुसैन साहब और उनके साथियों ने नौजवान अमीरे जामिया को अवगत करवाया जो आपको नगवार गुजरा।

अमीरे जामिया नौजवान, नये–नये हाकिम और शेहज़ादा यह गलतियॉ बर्दाश्त नही कर सके। गुस्से में बौले कौन है हमारी कमीयां बताने वाला उन्हें बुलाओ। शेख मोहम्मद अली मिस्री हाज़िर हुवे उनको और उनके साथियां को खूब फटकारा गया। यह है अमीरे जामिया की रंजिश की शुरूआत। 30 साल तक उन उस्तादों को हटाने की कौशिश चलती रही और 1390 हि. में उन तमाम मोअल्लिमों से बात करके उन पर तरह–तरह के जुल्म किए।

आप हिज़री सन् 1392 में जामिया को अलविदा कहकर उदयपुर तश्रीफ ले आये जहां आपने कई बच्चों को मजहबी दरस दिया कइयों पर शफकत का हाथ रखा ओर एक के बाद एक तसनीफ कर 100 से ज्यादा किताबों की इशाअत की। आपकी तसनीफात में कुछ ''कालमें–पाक की इस्माइली तफसीर'', ''इस्बातुत तावील व हकीकत'', ''दाइमुल इस्लाम'' का बोहरा गुजराती में तरजुमा, ''मय्यत के अहकाम'', निकाह व तलाक के अहकाम वागेरा अहम् है।

आर्टिकल सहयोग :
जनाब फखरूद्दीन आर. वी.

ऑल वर्ल्ड बोहरा जर्नल
पुनः प्रकाषन के लिये
हार्दिक शुभकामनाएँ
दाउदी बोहरा वेलफेयर सोसायटी, उदयपुर

Best Wishes For Redesining
All World Bohra Journal
Sanwa Enterprises
Udaipur
Deals in :
Modular Kitchen, Chimni, Hardware & Machine

Letter to the Editor :

आप अपने तअ्स्सुरात और मशविरों से आगाह करते रहें। अधिकतम 200 शब्दों में लिखें।

We invite you to write to us with your views and opinion on any issue. Your letters should not be more than 200 words.

Addressed to: The Editor, All World Bohra Journal, 73, Dr. Zakir Hussain Marg Udaipur 313001

Class I

Fatima Panwala	97.09
Abbas Tailor	96.00
Majida Jawriyawala	95.25
Fatima Sabunwala	94.70
Aabida Kankroliwala	94.10
Ibtesama	93.69
Saeed-ul-Khair	92.50
Danish Ahmed Mehmuda	92.20
Kaneez Fatima	92.00
Ali Mazhar Luqmani	90.80
Rizwana Kadar	90.45
Asad Ali R.V.	90.35

Class II

Sarvar-E-Abbas	98.10
Sajid Rajnagarwala	97.63
Irfan Hitawala	95.25
Asim Ali D.M.	94.91
Afroz Kholiyawala	94.33
Owais Sanwari	93.66
Raashida Attari	91.36
Rifat Sabunwala	90.16
Nabila Attari	90.00

Class III

Ali Asgar Gurawala	99.15
Ziya Nath	98.76
Gulnaz Rasiya	97.80
Mehdi R.V.	96.53
Ibtisam Hussain	96.08
Ali Hussain Waghpurawala	95.92
Naeem Zaki R.V.	95.42
Mazhar Ali Patwala	95.00
Hussain Gumani	93.08
Mustafa Waghpurawala	92.91
Akhyar Kathawala	91.75
Fatima Alamshah	91.33
Waheeda K.R. Wala	91.18
Hasnain Paliwala	91.08
Fauzan	90.99
Aitaz Hussain	90.17

Class IV

Ahqwaf Ognawala	96.83
Rizwan Ali Hitawala	95.25
Malak Ahmed	94.16
Faiz Fateh	93.75
Riyaz Kagzi	93.58
Adnan Nath	93.41
Saba Nath	93.18
Ali Hasnain Bohra	93.00
Saliha Bohra	92.74
Abul Fazal Luqmani	91.76
Saima Fateh	91.68
Tahir Ali	90.83
Adil Ali Modi	90.50
Azhar Ali Khakherwala	90.39
Aamir Gumani	90.00

Class V

Altaf Luqmani	97.50
Naazish	95.71
Ali Abbas Magar	93.50
Hasabiya Khakherwala	92.14
Nida Sabeel wala	92.14
Ahad Sanwari	91.40
Meraj Ahmed	91.27
Danish Sabunwala	90.36

Class VI

Muztabi Sultan	96.27
Arifa Sabilwala	93.14
Arsh Fateh	93.11

Class VII

Sarwar Hussain	94.11
Alisha Tobwala	92.91
Abbas Ali Cyclewala	92.28

Class VIII

Mehlka	95.83
Farhat Abbas R.V.	95.72
Fatima Nath	94.20

Class IX

Faisal Ali	96.22
Hussain Saleha	95.33
Saba Kathawala	94.80

Class X

Hina Fatima	89.60
Nazima Palanawala	86.61
Nabila R.G.	85.60

Class XI (Science)

Hina Fatima	86.93
Nabila R.G.	86.70

Class XI (Commerce)

Rafika	90.00
Atiya Sanwari	67.92
Nazeen Gilonwala	64.84

Class XII (Science)

Ali Hussain Kadar	91.00
Ali Mazhar Modi	88.80
Benazeer Hitawala	88.20

Class XII (Commerce)

Zenab Gurawala	90.00
Fatima Kholiyawala	89.20
Ali Mazhar Bohra	82.28

B.Sc

Shaheen Amar Haiderji	62.44

B.Com.

Quresh Gohria	69.71
Sabir Ali	69.33
Abida Dehlvi	69.14
Mubina Attari	65.80
Fatima Modi	61.00
Mohsina Hitawala	60.85

B.B.M

Arifa Ognawala	62.61

M.Sc

Yasmeen Tailor	81.50
Benazir Okasa	66.80
Sakina Tidi	63.83

M.Com

Kaneez Fatima M.G.	71.10
Arifa Attari	70.90
Asrar Ahmed D.M.	67.00
Farkhruddin Mahuwala	62.90
Zeenat Nawania	62.80
Fatima Banu Hakim	62.55
Naseem Sehar	62.00

M.A

Almas Jaipuri	62.66

M.B.A

Asrar Ahmed D.M.	78.62
Siddiqa Kathawala	70.46
Farhat Itarsi	69.96
Tamseel Sanwari	62.64

B.D.S

Farhat Saify	

B.E

Shaheena Lokhandwala	77.53
Shaheen Bohra	76.27
Lookman Ali R.V.	70.46
Shabana Bagwala	69.93
Tabassum Attari	69.90
Tokeer Hussain Habib	68.04
Nahid Peepawala	61.80
Irshad Hussain Jaipuri	
Shabnam A.T.	
Asrar Taj	

C.A

Fatima Banu Hakim	I.C.A.I
Mohd Anees Paliwala	I.C.A.I
Sarfaraz Hussain Habib	I.C.A.I

Ph.D

Mehtab Attari	Ph.D
Farhat Habib	Ph.D

हाजी इस्माइल जी अत्तर वाला अवार्ड

फरहत हबीब को ओहियों यूनिर्वसिटी से *Ph.d.* की सनद हासिल करने के लिये, मुरतजा मगर को संगीत और अनीस आर जी को खेल में पूरे देश में नाम रोशन करने के लिये दिया गये ।

उपर दी गयी लिस्ट में किसी भी त्रुटि के लिये संपादक मण्डल खेद व्यक्त करता है।

स्टुडेंट वेलफेयर सोसयटी का केरियर कॉउसिलिंग प्रोग्राम।

"Career option & opportunity in commerce stream" विषय पर *Lecture series* का आयोजन 18 मई को सोसयटी की जानिब से खांजीपीर मेमोरियल ट्रस्ट के ट्रस्टी व सेक्रेट्री कमाण्डर मंसूर अली की प्रेरणा से मुनअ्किद् किया। इसका मक़सद बच्चों को अपनी क़ाबिलीयत के हिसाब से मुस्तक़बिल तय करना था।

इस प्रोग्राम को मशहूर Career Counselor मनीष नलवाया ने खिताब किया। कार्यक्रम की सदारत करते हुए दाउदी बोहरा जमाअत के सदरे मोहतरम आबिद अदीब साहब ने बताया कि बच्चों के मुस्तकबिल को लेकर सोसायटी का यह कदम बहुत अहमियत वाला है। उदयपुर चार्टड एकाउटेंट कांउसिल के सदर श्री निर्मल धाकड़ मेहमाने खुसूसी रहे। आपने सोसायटी के इस क़दम को बहुत अच्छा प्रयास बताते हुए कहां कि हर समाज को इस तरह के प्रोग्राम आयोजित करने चाहीये जिससे न सिर्फ उस समाज का बल्कि पूरे देश का कल्याण हो सके। मेहमानों का परिचय शाहीन डी.एम.शहनाज ब्यावर ने दिया, सदर तौसीफ टीडी वाला, सचिव अजीज पलाना, मुज्ताबा आर.जी. फरहद हुसैन मण्डी वाला ने सभी आगानुतकों का स्वागत किया। कमांण्डर मसूर अली ने धन्यवाद् ज्ञापित किया। कार्यक्रम का सचांलन परवीन इफ्तिखार ने किया।

दीनी कलाम और दीनी तालीम

बराहे करम इस सफह की ताज़ीम करियेगा।

1. कुरान पाक

कहदो (आप याने रसूलेखुदा स.अ.स.) कि अगर इनसान और जिन्न इस बात पर मुत्तफिक हो जाए कि इस क़ुरआन जैसा दूसरा क़ुरआन ले आए, तो ये लोग नहीं ला सकेंगे ऐसा कुरआन, भले ही एक दूसरे के मददगार बने। और हमने लोगों के लिए इस कुरआन में तरह–तरह के बयानों में से मिसालें क़ायम की (सब बातें तरह–तरह से बयान कर दी) मगर अकसर इंसानों ने ना–शुक्री की (सुरः बनी इसराईल आयात 88–89)

(माखुजः इस्माईली तफसीर – शेख अहमद अली साहब ''राज'')

2. अहादीस

1. आमाल का आधार निय्यतों पर है।
2. आपसी बैठकों में जो बाते होती है, उसे अमानत समझो।
3. मशविरा देने वाले को अमीन समझो (अथवा अमीन बनकर मशविरा दो।)
4. वाअ्दा एक किस्म का अतिया (भेंट है) और एक किस्म का देन (ऋण) है।

(माखुजः मजमाउल बहरेन – शेख अहमद अली साहब ''राज'')

3. नहजुल बलाग़ह

अक़वाले हिक़मत जो शख्स लालच को अपना शिआर (वह कपड़ा जो बदन से लगा हो) बना देता है तो ऐसे शख़्स ने खुद को मायूब (अेब वाला) बनाया और जो शख्स अपनी तकलीफों को ज़ाहिर किया तो उसने ज़िल्लत को पसंद किया और जिस शख्स ने अपनी ज़ुबान को अपना हाकिम बनाया तो ऐसा शख़्स ब–वक़ार हुआ !

(माखुज– मजमाउल बहरेन हिस्सा पहला पेज 101 शेख अहमद अली साहब ''राज'')

दीनी तालीम

मुमिनीन वालिदेन और सरपरस्तों से गुज़ारिश उर्दू और अरबी सीखने और सिखाने की एहमीयत

यह बात अज़हर मिनश्म्स है कि हमारी दीनी किताबें अरबी ज़ुबान में है। चाहे कुरान हो, हदीस हो, शरीयत के अहकाम को या फिक़ह हो। हर ज़ुबान का अपना एक अंदाज और उसलूब होता है और उसके मफहूम (अर्थ) को समझने के लिए मख़सूस (विशेष) अलफाज़ और मुहावरे होते है जो उस ज़ुबान के माहोल और मिजाज़ के मुताबिक होते हैं।

जब इसका अनुवाद दुसरी ज़ुबान में किया जाता है तो इसकी रूह कुछ हद तक बाक़ी नहीं रह जाती। यह बात ख़ुसूसन मज़हबी किताबों के अनुवाद में तो और भी ज्यादा लागु होती है क्योंकि उसकी ज़ुबान आम इबारतों से मुख्तलिफ होती है।

यह हमारे लिए काफी तसवीश का बाइस है कि हमारी मौजुदा नस्ल हमारी मादरी ज़ुबान के रसमुल खत से नावाकिफ होती जा रही है और हम तमाश–बीन बन कर रह गये हैं।

हालांकि इस सुरते–हाल के लिए हालाते ज़माना ने भी अपना किरदार निभाया है मगर शुक्र है कि हममें अभी भी ऐसे लोग मौजुद है, जो हमारी नस्ल को उर्दु और अरबी की बुनियादी तालीम दे सकते है।

इसी ग़रज़ से स्कूल ऑफ दीनी तालीम की तरफ से इस अहम काम को अंजाम देने के लिए छुट्टियों में क्लासेस चलाई जा रही है। हम सब पर यह जिम्मेदारी आयद होती है कि हम इस सिलसिले से फेज़ हासिल करें और अपनी नस्ल को उर्दु और अरबी ज़ुबान और उनके रसमुल खत से रोश्नाश कराएँ! इसी से हमारी मज़हबी पहचान बनी रह सकती है!

इसी तरह हर जुमाअ की रात रसूलपुरा की मस्जिद में बड़ों के लिए जो प्रोग्राम चलाया जा रहा है उसे कलामे पाक, नहजुल बलाग़ह, दआइमुल–इस्लाम और इस्लामिक हिस्ट्री पर होने वाले लेकचर्स और बहस मुबाहिस में हिस्सा लेकर अपने दीन और अपनी मुस्लिम पहचान को हम न सिर्फ बरक़रार रख सकते है बल्कि अपने बच्चों को भी एडवान्स नॉलेज दे सकते है।

हमारी अपील है कि वालिदेन सर परस्त और आम मोमीनीन इस पर ग़ौर करें और स्कूल ऑफ दीनी तालीम की कोशिशों को कामयाब बनाने में हिस्सा लेवें।

मुख़्तलिफ खबरें

- मालेगांव रोशन ख्याल जमाअत के मुअज़्ज़िज़ मेम्बर और शिक्षाविद् डॉ. मेहदी हसन साहब के उदयपुर प्रोग्राम के दौरान आप जमाअत के औहदेदारान से मिले और हाल में चल रहे मुक़द्दमों पर तफसील से चर्चा की एवं कई अहम दस्तावेज़ों की प्रतिलिपीयां भी जमाअत को सुपुर्द की।
- बोहरा यूथ मेडीकल रिलीफ सोसायटी ने 10,जून 2008 को फीजीयोथेरेपी सेंटर प्रारंभ किया गया इसका उद्घाटन जनाब आबिद अदीब साहब ने किया। सेंटर पर मशहूर आर्थोपेडिशीयन डॉ. मनीष अग्रवाल की सेवाएं उपलब्ध रहेगी।
- सैयदना कुतबुद्दीन शहीद के उर्स की मजालिस हस्बे–दस्तूर जनाब पीर अली की सदारत में वजीहपुरा की मस्जिद में सम्पन्न हुई। दूसरे दिन नियाज़ का अहतमाम मरहूम शेख अहमद अली साहब के परिजनों की जानिब से किया गया।
- मौलाए काात अमीरूल मोमिनीन अली (अ.स.) की विलादत के मौके पर स्टुडेंट वेलफेयर सोसयटी की जानिब से 13 जुलाई बरोज इतवार को बोहरा यूथ कम्यूनिटी हॉल में सुबह 9.30 बजे एक प्रोग्राम रखा गया। जिसमें शहीद रजब अली मेमोरियल टुर्नामेंट के इनामत भी तक़सीम किये जायेंगे।
- सैयदी लुकमान जी साहब (आ.कु.) के उर्स मुबारक की मजालिस 28, रजब की रात को होगी। 29मीं रजब को नियाज़ दाउदी बोहरा जमाअत की जानिब से होगी।
- बोहरा यूथ तहरीक के माज़ी, हाल व मुस्तकबिल पर मज़मून नवीसी का मुकाबला बुरहानी लायब्रेरी की जानिब से हाल में आयोजित कि गया। लाइब्रेरी के सेकेट्री जनाब याकूब अली जहीर ने बताया कि नतीजों का एलान व इनामात मौलाए कायनात अमीरूल मोमिनीन अली (अ.स.) की विलादत की मजलिस में किये जायेंगे।

Muslim girl in World Records

Alia Sabur, 19, was a few months ago, announcedyoungest full-time college professor in history by the Guinness Book of World Records.

Alia has had an illustrious childhood. She is a child prodigy from Northport. She enrolled at Stony Brook University in America at age 10 and played clarinet with the Rockland Symphony Orchestra at 11. When this New York child genius was 14 she earned her bachelor's degree. Sabur was 18 when she was as a professor in the Department of Advanced Technology Fusion at Konkuk University, in Seoul of ROK.

Before this, Alia was teaching math and physics courses at Southern University in New Orleans.

Girls break shackles

In a good sign of breaking shackles, about a dozen Muslim girls have joined a nursing course offered by a local charitable trust Anjuman Khairul Islam in Mumbai. This they did despite opposition from some quarters. The trust was asked to stop the course but its students and their parents supported the program. The girls had to survive severe pressure. Almost all of these students are from impoverished families. Some are from an orphanage in Mumbra, a Muslim ghetto.

Young Kashmiri women into career building

Two decades of armed conflict have left a distinct mark on the social and cultural fabric of Kashmir. One of the major changes witnessed widely is a preference for career building to family life growing among young girls. Young Kashmiri women now want a bigger role in society and for this proper, rather higher, education is compulsory.

"Among the 30,000 students who appeared in tests for admissions to different technical and professional courses last year, over 16,000 were women. This phenomenon, says Nahida Yousuf, a student of sociology, is because of the high divorce rate and post-marital conflict in Kashmir.

"A woman wants to be self-reliant after marriage. This is possible only if

she has a permanent job, and jobs are available only to highly educated people, and as a result, many women are going in for higher education to qualify for jobs.

" Hundreds of young women in their late 20s and mid-30s can be seen pursuing higher studies in professional colleges, universities in and outside Kashmir, says Nahida. To give higher education to their daughters is a priority for parents as well.

Many complain that they could not find match for their daughters who do not work. Lassa Kak - a middleman who arranges marriages - says few men are ready to marry a non-working woman.

Irish peace prize for Benazir Bhutto

Slain Pakistani leader Benazir Bhutto was awarded Ireland's 2007 Tipperary Peace Prize for her 'courageous' work to promote democracy and reconciliation in her trouble-torn country. Bhutto, 'fought all her battles through dialogue and political debate and was an example to all those who do not use or surrender to terrorism,' said Martin Quinn, spokesman of the Tipperary Peace Convention. "Her selection as Peace Prize recipient should act as an inspiration to those in Pakistan who seek to secure democracy and reconciliation for their country."

The Tipperary Peace Convention said the accolade was to 'recognise the very difficult path towards peace

and democracy in Pakistan and the ultimate sacrifice made by Bhutto in her campaign to put her country back on the road to democracy."

"Bhutto, a former two-time prime Minister, was an incredibly brave and courageous woman who had returned from exile to her homeland to lead her party in the forthcoming elections. She knew the risks involved in her return but she did so because she felt that her country and the Pakistani people needed her."

ISLAM: MUSLIMS AND TERRORISM

By Asghar Ali Engineer

Islam is being invariably associated with terrorism both in media as well as in political circles, especially in Western countries. When they hear it being condemned by Muslim theologians, it is celebrated as something unusual. It is strange irony of both misunderstanding and motivated propaganda that if a small band of Osama's followers give call for jihad, it is taken as authentic Islamic call and if it is condemned by mainstream Islamic theologians, it is accepted with mixed feelings of celebration and skepticism. The mainstream condemnation of terrorism is somehow not accepted with conviction.

When the Darul Ulum Deoband, a leading Islamic seminary in Asia, held an anti-terrorism conference the media spotlighted it and number of articles and editorials were written in mainstream media. There was underlying skepticism that how thousands of Ulamas and imams could gather together in such large numbers, to denounce terrorism. In fact when media unceasingly targeted Islam for terrorism, these Ulamas thought it necessary to do so to convince their non-Muslim friends that Islam does not stand for terrorism.

In fact it was hardly necessary to do so as all Muslim theologians know fully well that there is no link, whatsoever, between Islam and terrorism but due to such continuing attacks, Muslim theologians had to issue a declaration condemning terrorism. Let it be noted that not only Osama bin Laden but not a single leading member of Al-Qaida is a qualified theologian. They are all modern educated youth or politicians. Among Taliban too, there is no theologian of any credible standing. Some of them may be product of madrasas in North West Frontier province of Pakistan but they never went for higher Islamic studies. They never got beyond preliminary Islamic education. It was their political bosses who decided course of action and formulated policies invoking jihad to justify their acts of terrorism.

There are in all 41 verses in Qurâan on jihad and not a single verse uses it for war or violence.

Never any major theologian ever justified acts of terrorism. One of major Islamic thinker and theologian from West Asia issued any fatwa approving of terrorism as jihad. Yusuf Qardawi, a well-known theologian and highly respected by orthodox Muslims, condemned terrorism and suicide bombing killing of innocent people. A conference of leading Muslim scholars also condemned suicide bombing as un-Islamic. Qurâan is so clear on the issue along with Hadith literature that save on political grounds, no one can approve of acts of terrorism.

There are in all 41 verses in Qurâan on jihad and not a single verse uses it for war or violence. In early twentieth century when terrorism, like today, was not the issue, a noted scholar of Islam Maulavi Chiragh Ali wrote a scholarly book on jihad and showed that not even once word jihad has been used for war or violence in Quraan. It is really a landmark work for those who want to understand meaning of jihad in Qurâan.

The Prophet of Islam (PBUH) himself never fought any war of aggression; he fought battles only in defense. Most of the battles Prophet (PBUH) fought was in and around Madina where he had migrated to, to escape severe prosecution from his and Islam's enemies in Mecca. It is opponents of Islam who attacked Madina and Prophet fought back. He followed the injunction of the Qurâan. And fight in the way of Allah those who fight against you but be not aggressive. Surely Allah does not love aggressors. (2:190)

This Quraanic verse is self-explanatory and does not need any elaboration. How the Prophet could have violated this injunction from high on in his own lifetime? The real problem is that one fails to distinguish what is theological and what is political. Many Muslims had their own political interests and they conveniently invoked doctrine of jihad for their political project as Osama bin Laden has been doing in our own times.

The invocation of jihad for political purposes is post-Qurâanic development. The Prophet would have never approved it. Those who kept away from political struggle for power like Sufis, gave jihad a very different meaning. According to Sufis love and peace is the basis of Islam and jihad is spiritual struggle to control one's desires. In other words, real jihad is war against one's own desires, as it is selfish desires which require human beings to resort to violence.

In fact Sufis always kept themselves away from political power struggle and believed in leading peaceful life and emphasized doctrine of sulh-i-kul (total peace and peace with all). Since they never involved themselves in political power struggle they led a simple life and busied themselves in suppressing their desires and tried to achieve what Qurâan calls nafs mutmaâinnah (i.e. peaceful and satisfied soul). This could be possible only if one controlled one's desires.

According to Sufis love and peace is the basis of Islam and jihad is spiritual struggle to control one's desires.

It was Sufi Islam, which was most popular among the masses, as Muslim masses also had nothing to do with wars for political domination. Sufis believed in controlling themselves rather than control others. One needs violence only when one wants to control others, rather than oneself. Since Sufis controlled themselves they avoided violence and politicians desire to control others and hence justify use of violence.

To be continued in next issue

- Centre for Study of Society and Secularism, Mumbai

e-mail: csss@mtnl.net.in

अरब मुस्लिम साईंटिफिक रिकार्ड को कम्प्यूटराईज किया जायगा।

अरब न्यूज़ को हवाला बताते हुए ख़बर छापी है कि किंग अब्दुल्लाह युनिवर्सिटी ऑफ साईस एण्ड टेक्नोलोजी और अमेरीका की *US library of Congress* ने एक मनसूबा तैयार किया है जिसके जरिये तमाम अरब और मुस्लिम साईंटिफिक रिकार्ड को कम्प्यूटराईज (Digitilized) किया जायगा। ऐसे रिकोर्डस को World Digital Library की मारिफत मुफ्त में इन्टरनेट पर हासिल किया जा सकेगा। इससे महान अरब मुस्लिम सभ्यता की उपलब्धियों से दुनिया के लोगों को वाकफियत होगी । अख़बार लिखता है कि यह एक महत्वपूर्ण ख़बर है। यह Library UNESCO अगले साल शुरू करने जा रहा है। इसका मक़सद तमाम लोगों को आलमी और आपसी तहजीबों – तमद्दुन को समझने का मौका फराहम करना है।

अरब और मुस्लिम दुनिया के लिए यह फ़ख़ की बात होगी कि इससे मुसलमानों में फैली यूरोप के मुकाबले एहसासे कमतरी को कम करने में मदद मिलेगी जो पिछली सदियों में मुस्लिम गिरावट की एक वजह रही हैं।

पाठकों को यह याद दिलाया जाना ठीक रहेगा कि जिस दौर को यूरोपीयन अंधकार युग कहते है वह असल में उनकी *Dark Age* (अंधकार युग) थी। उस अंधकार युग में इस्लामी तहजीब और उलूम शीर्ष पर थे और उसी ने सोए हुवे यूरोप को जगाया था। स्पेन (हिस्पानीया) पर सदियों तक अरब मुस्लिम हुकुमत रही और उस दौर में तमाम उलूम जो आलमे इस्लाम में परवान चढ़ रहे थे योरोपियन को देखने और समझने को मिले थे और इससे उन्होंने काफी फवाइद भी हासिल किये। कुछ यूरोपियनों ने भी इमानदारी बताते हुए उनके पुनर्जागरण बेदारी (*Renaissance*) में इस्लामीक लिट्रेचर्स को सहायक माना है।

- Courtesy: The Dawn

मज़हबों पर बाहमी गुफ्तगु

सउदी अरब के शाह अब्दुल्ला को मक्का में बुधवार से शुक्रवार (4 से 6 जून 2008) को हुई मुसलमान ओलोमा की कॉन्फ्रेस में 500 उलुमा का समर्थन मिला है जिसमें बादशाह की तजवीज़ शुदा इसाई और यहुदी उलोमा के साथ बैठक कर बाहमी गुफ्तगु से तअल्लुकात को बहेतर बनाने की पहल करने की बात कही गई है। शाह अब्दुल्लाह ने गुजिशता साल पोप बेनेडिकट से बेटीकन में मुलाकात के दौरान यह तज़वीज़ पेश की थी। तीनों मज़हिब के उलुमा की ऐसी बैठक इसी साल होने की सम्भावना हैं। 500 उलुमा में ईरान के पूर्व सदर हाशिम रफसंजानी और ज़ामे अजहर के ग्रान्ड मुफ्ती भी थे।

- Courtesy: Gulf News, Dubai

शुक्रिया सद् शुक्रिया

इस बेश–बहातआवुन और ज़िम्मेदारी के लिये

''बोहरा जर्नल'' की शुरूआत से ही इदारत की ज़िम्मेदारी सम्भाल कर जनाब सालेह मोहम्मद 'नायब' साहब ने इस इदारे की जो बेश–क़ीमती ख़िदमात अंजाम दी है, उनके लिये इदारा उनका बेहद मशकूर है।

''बोहरा जर्नल'' में साधनों की कमी के बावजूद अपनी कलम से बरसों क़ौम के हालात की तस्वीर पेश करते रहे और गुज़रते हुए वाकिआत से बाख़बर करते रहे। दुनियावी मामलात के साथ दीनी उमूर ''कुरआन मजीद'' के हवाले से पेश कर दीनी फ़राय़ज की अंजामदही करते रहे और ये सब आपने तने–तन्हा किया।

इस बेश–बहातआवुन के लिये उनकी ख़िदमात का ऐतराफ़ करते हुए इदारा उनका अहसानमन्द है और आयन्दः भी उनके तजरूबों और मशवरों से फायदा उठाने का ख्वाहिश–मन्द भी।

जनाब 'नायब' साहब अदबी और समाजी दुनिया की मशहूर शख़सियत है। तालीमी मैदान और बोहरा यूथ की तेहरीक में उनकी सेवायें अनमोल रही हैं। अभी भी 'बुरहानी लायब्रेरी' और 'स्कूल ऑफ दीनी तालीम' आपके मातहत चल रहे हैं।

– इदारा

THE UDAIPUR URBAN CO-OP. BANK LTD.

Banking You Can Bank Upon

Best wishes to : "ALL WORLD BOHRA JOURNAL" on its inaugural issue in a NEW AVTAR

Call upon for : Personal Loans * Home Loans * Vehicle Loans* Business Loans

We promise competitive interest rates and speedy disposal.

Pannadhay Marg Branch	Dhan Mandi Branch	Bada Bazar Branch
Ph: 0294 2422461 M: 9928790762	Ph: 0294 2422355 M: 9828162044	Ph: 0294 2420429 M: 9414738065

Fatehpura Branch	Madhuvan Branch	Hiran Magri Branch	Krsihi Mandi Branch
Ph: 0294 2450762 M: 9828195535	Ph: 02942423542 M: 9460402651	Ph: 0294 2460893 M: 9414786877	M: 946030453

Rajsamand Branch	Salumber Branch	Fateh Nagar Branch
Ph: 95 2952 224022 M: 9460415822	Ph: 95 2906 231250 M: 979903464	Ph: 95 2955 220316 M: 9929996972

Editorial Board: Editor: Razia Sanwari, Editorial Assistant : Tauseef Hussain Mandi wala.
Advisory Board: Abid Adeeb; Mansoor Ali Bohra; Hussain Udaipuri; Yaqub Ali; Mansoor Ali Nathdwarwala & Yusuf R.G.
Published by: Bohra Youth Sansthan, 73, Dr. Zakir Hussain Marg, Phone: 91-0294-2521719; Fax: 91-0294-2524886
E-mail: bohra.journal@hotmail.com
Printed by: National Printers, 124, Chetak Marg Udaipur - 313001